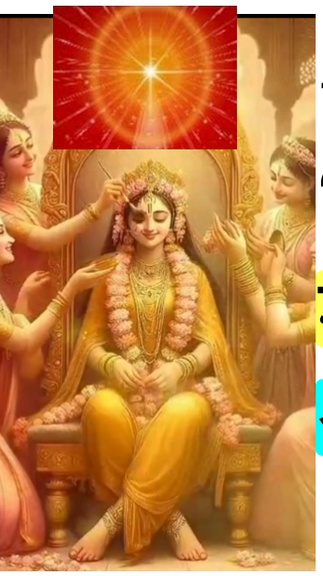

18-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बेहद का बाबा आया है तुम बच्चों का ज्ञान से श्रृंगार करने, ऊंच पद पाना है तो सदा श्रृंगारे हुए रहो"

प्रश्नः- किन बच्चों को देखकर बेहद का बाप बहुत खुश होते हैं?

उत्तरः- जो बच्चे (1) सर्विस के लिए एवररेडी रहते हैं, (2) अलौकिक और पारलौकिक दोनों बाप को पूरा फालो करते हैं, (3) ज्ञान-योग से आत्मा को श्रृंगारते हैं, (4) पतितों को पावन बनाने की सेवा करते हैं, ऐसे बच्चों को देख बेहद के बाप को बहुत खुशी होती है। बाप की चाहना हैं मेरे बच्चे मेहनत कर ऊंच पद पायें।

Follow me

ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों प्रति कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चों, जैसे लौकिक बाप को

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

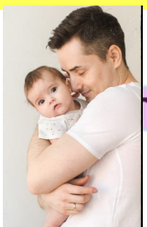

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा mp.

बच्चे प्यारे लगते हैं वैसे बेहद के बाप को भी बेहद के बच्चे प्यारे लगते हैं। बाप बच्चों को शिक्षा, सावधानी देते हैं कि बच्चे ऊंच पद पायें। यही बाप की चाहना होती है। तो बेहद के बाप की भी यह इच्छा रहती है। बच्चों को ज्ञान और योग के गहनों से श्रृंगारते हैं। तुमको दोनों बाप बहुत अच्छी रीति श्रृंगारते हैं कि बच्चे ऊंच पद पायें। अलौकिक बाप भी खुश होते हैं तो पारलौकिक बाप भी खुश होते हैं, जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं, उन्हों को देखकर गाया भी जाता है फालो फादर। तो दोनों को फालो करना है। एक है रूहानी बाप, दूसरा फिर यह है अलौकिक फादर। तो पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है।

सी फादर, फॉलो फादर

तुम जब भट्ठी में थे तो सबका ताज सहित फोटो निकाला गया था। बाप ने तो समझाया है In Real लाइट का ताज कोई होता नहीं। यह Symbol of Purity एक निशानी है पवित्रता की, जो सबको देते हैं। ऐसे नहीं कोई सफेद लाइट का ताज होता है। यह पवित्रता की

निशानी समझाई जाती है। पहले-पहले तुम रहते हो सतयुग में। तुम ही थे ना। बाप भी कहते हैं, आत्मायें और परमात्मा अलग रहे बहुकाल...... तुम बच्चे ही पहले-पहले आते हो फिर पहले तुमको ही जाना है। मुक्तिधाम के गेट्स भी तुमको खोलने हैं। तुम बच्चों को बाप श्रृंगारते हैं। पियरघर में वनवाह में रहते हैं। इस समय तुमको भी साधारण रहना है। न ऊंच, न नीच। बाप भी कहते हैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। कोई भी देहधारी को भगवान कह नहीं सकते। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कर नहीं सकते। सद्गति तो गुरू ही करते हैं। मनुष्य 60 वर्ष के बाद वानप्रस्थ लेते हैं फिर गुरू करते हैं। यह भी रस्म अभी की है जो फिर भक्तिमार्ग में चलती है। आजकल तो छोटे बच्चे को भी गुरू करा देते हैं। भल वानप्रस्थ अवस्था नहीं है परन्तु अचानक मौत तो आ जाता है ना इसलिए बच्चों को भी गुरू करा देते हैं। जैसे बाप कहते हैं तुम सभी आत्मायें हो, हक है वर्सा पाने का। वह कह देते हैं गुरू बिगर ठौर नहीं पायेंगे अर्थात् ब्रह्म में लीन नहीं होंगे। तुमको तो

आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सत्गुरु मिला दलाल।
आत्मा और परमात्मा बहुत काल से (सतयुग से कलियुग अन्त तक) अलग रहे। अब सत्गुरु परमात्मा शिव धरती पर आकर आत्माओं से मिलन मनाते हैं। आत्मा परमात्मा से अलग हुए 5000 वर्ष हुए। अब आत्मा का परमात्मा के साथ इस संगमयुग पर जो सुन्दर मिलन मेला होता है, वह ब्रह्माबाबा दलाल के माध्यम से होता है।

How Great we are...!

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

ये पक्का समझ लो..

Simple Logic

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

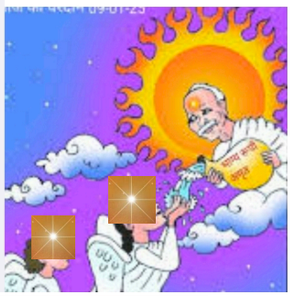

चाहे प्यार से ..
चाहे मार से..

Choice is All yours

महाकाल उवाच:

लीन नहीं होना है। यह भक्ति मार्ग के अक्षर हैं। आत्मा तो स्टार मिसल, बिन्दी है। बाप भी बिन्दी ही है। उस बिन्दी को ही ज्ञान सागर कहा जाता है। तुम भी छोटी आत्मा हो। उसमें सारा ज्ञान भरा जाता है। तुम How Lucky we are...! फुल ज्ञान लेते हो। पास विद् ऑनर होते हैं ना। ऐसे नहीं कि शिवलिंग कोई बड़ा है। जितनी बड़ी आत्मा है, उतना ही परम आत्मा है। आत्मा परमधाम से आती है पार्ट बजाने। बाप कहते हैं मैं भी वहाँ से आता हूँ। परन्तु मुझे अपना शरीर नहीं है। मै रूप भी हूँ, बसन्त भी हूँ। परम आत्मा रूप है, उनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। ज्ञान की वर्षा बरसाते हैं तो सभी मनुष्य पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बन जाते हैं। बाप गति सद्गति दोनों देते हैं। तुम सद्गति में जाते हो बाकी सब गति में अर्थात् अपने घर में जाते हैं। वह है स्वीट होम। आत्मा ही इन कानों द्वारा सुनती है। अब बाप कहते हैं मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों वापस जाना है, उसके लिए पवित्र जरूर बनना है। पवित्र बनने बिगर कोई भी वापिस जा न सके। मैं सबको ले जाने आया हूँ। आत्माओं को शिव की बरात कहते

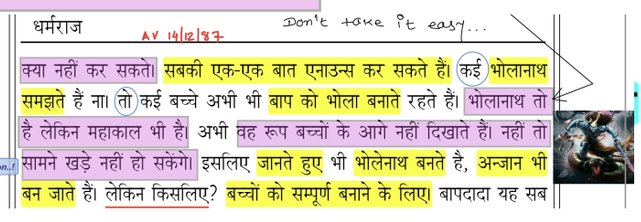

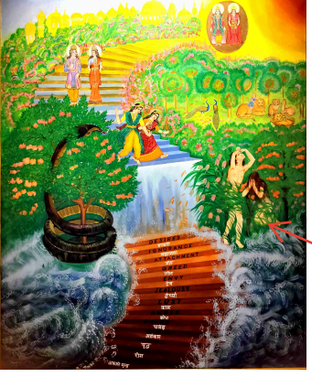

हैं। अब शिवबाबा शिवालय की स्थापना कर रहे हैं। फिर रावण आकर वेश्यालय स्थापन करते हैं। वाम मार्ग को वेश्यालय कहा जाता है। बाबा के पास बहुत बच्चे हैं जो शादी करके भी पवित्र रहते हैं। संन्यासी तो कहते हैं - यह हो नहीं सकता, जो दोनों इकट्ठे रह सकें। v/s यहाँ समझाया जाता है इसमें आमदनी बहुत है। पवित्र रहने से 21 जन्मों की राजधानी मिलती है तो एक जन्म पवित्र रहना कोई बड़ी बात थोड़ेही है। बाप कहते हैं तुम काम चिता पर बैठ बिल्कुल ही काले बन गये हो। श्रीकृष्ण के लिए भी कहते हैं गोरा और सांवरा, श्याम सुन्दर। यह समझानी इस समय की है। काम चिता पर बैठने से सांवरे बन गये, फिर उनको गांव का छोरा भी कहा जाता है। बरोबर था ना। श्रीकृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में बाप प्रवेश कर गोरा बनाते हैं। अभी तुमको एक बाप को ही याद करना है। "बाबा आप कितने मीठे हैं, कितना मीठा वर्सा आप देते हैं। हमको मनुष्य से देवता, मन्दिर लायक बनाते हो।" ऐसे-ऐसे अपने से बातें करनी हैं। मुख से कुछ

—: example :—

ज्ञान चिता

v/s

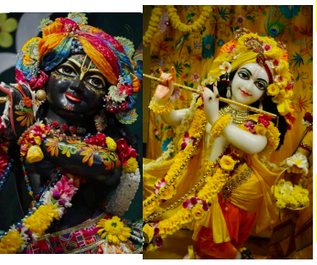

Shyam Sundar

Note this down and use it in Meditation

रूह - रूहान

आपको खा जाऊ मीठे बाबा...

बोलना नहीं है। "भक्ति मार्ग में आप माशूक को कितना याद करते आये हैं। अभी आप आकर मिले हो, बाबा आप तो सबसे मीठे हो। आपको हम क्यों नहीं याद करेंगे। आपको प्रेम का, शान्ति का सागर कहा जाता है, आप ही वर्सा देते हो," बाकी प्रेरणा से कुछ भी मिलता नहीं है। बाप तो सम्मुख आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है ना। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यह राजयोग है। अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन को जान गये हो। इतनी छोटी आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। है भी बना-बनाया। इनको कहा जाता है अनादि-अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। ड्रामा फिरता रहता है, इसमें संशय की कोई बात नहीं। बाप सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं, तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। तो उससे तुम्हारे पाप कट जाते हैं। बाकी श्रीकृष्ण ने कोई स्वदर्शन चक्र चलाकर हिंसा नहीं की। वहाँ तो न लड़ाई की हिंसा होती, न काम कटारी चलती है। डबल अहिंसक होते हैं। इस समय तुम्हारी 5

समझा?

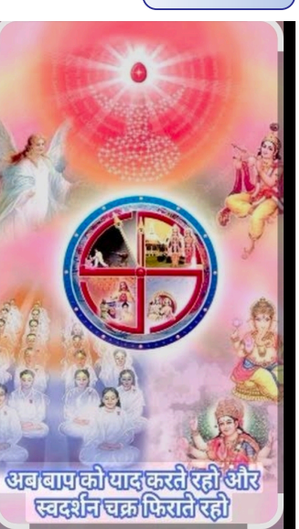

18-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Simple Math..

m.m.m....imp.

Point to ponder very deeply...

विकारों से युद्ध चलती है। बाकी और कोई युद्ध की बात ही नहीं। अब बाप है ऊंच ते ऊंच, फिर ऊंच ते ऊंच यह वर्सा लक्ष्मी-नारायण, इन जैसा ऊंच बनना है। जितना तुम पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। कल्प-कल्प वही तुम्हारी पढ़ाई रहेगी। अभी अच्छा पुरुषार्थ किया तो कल्प-कल्प करते रहेंगे। And vice versa जिस्मानी पढ़ाई से इतना पद नहीं मिल सकता जितना रूहानी पढ़ाई से मिलता है। So, choose what to do, wisely...

जितना दीदार होता है तो बहुत रोते हैं, दु:ख में आकर बहुत आंसू बहाते हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं आंसू आया तो फेल। अम्मा मरे तो हलुआ खाओ.... आजकल तो बाम्बे में भी कोई बीमार पड़ते वा मरते हैं तो बी.के. को बुलाते हैं कि आकर शान्ति दो। तुम समझाते हो आत्मा ने एक शरीर छोड़ दूसरा लिया, इसमें तुम्हारा क्या जाता। रोने से क्या फायदा। कहते हैं, इनको काल खा गया.. ऐसी कोई चीज़ है नहीं। यह तो आत्मा

आपेही एक शरीर छोड़ जाती है। अपने समय पर शरीर छोड़ भागती है। बाकी काल कोई चीज़ नहीं है। सतयुग में गर्भ महल होता है, सज़ा की बात ही नहीं। वहाँ तुम्हारे कर्म अकर्म हो जाते हैं। माया ही नहीं जो विकर्म हो। तुम विकर्माजीत बनते हो।

पहले-पहले विकर्माजीत संवत चलता है फिर भक्ति मार्ग शुरू होता है तो विक्रम संवत शुरू होता है। इस समय जो विकर्म किये हैं उन पर जीत पाते हो, नाम रखा जाता है विकर्माजीत।

फिर द्वापर में विक्रम राजा हो जाता, विकर्म करते रहते हैं। सुई पर अगर कट चढ़ी हुई होगी तो

चुम्बक खींचेगा नहीं। जितना पापों की कट उतरती जायेगी तो चुम्बक खीचेगा। बाप तो पूरा प्योर है। तुमको भी पवित्र बनाते हैं योगबल से।

जैसे लौकिक बाप भी बच्चों को देख खुश होते हैं ना। बेहद का (v/s) बाप भी खुश होता है बच्चों की सर्विस पर। बच्चे बहुत मेहनत भी कर रहे हैं।

सर्विस पर तो हमेशा एवररेडी रहना है। तुम बच्चे हो पतितों को पावन बनाने वाले ईश्वरीय मिशन। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो, बेहद का बाप है और

That's All

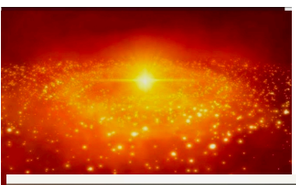

तुम सब बहन-भाई हो। बस और कोई संबंध नहीं। मुक्तिधाम में है ही बाप और तुम आत्मायें भाई-भाई फिर तुम सतयुग में जाते हो तो वहाँ एक बच्चा, एक बच्ची बस, यहाँ तो बहुत संबंध होते हैं - चाचा, काका, मामा...आदि।

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

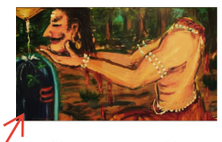

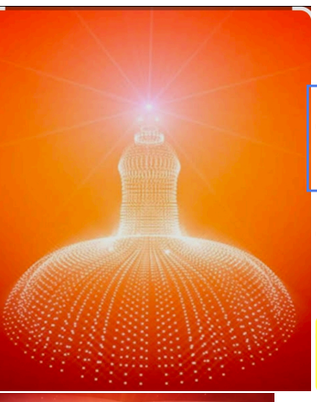

मूलवतन तो है ही स्वीट होम, मुक्तिधाम। उसके लिए मनुष्य कितना यज्ञ तप आदि करते हैं परन्तु वापिस तो कोई भी जा न सके। गपोड़े बहुत मारते रहते हैं। सर्व का सद्गति दाता तो है ही एक। दूसरा न कोई। अभी तुम हो संगमयुग पर। यहाँ हैं ढेर मनुष्य। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। स्थापना फिर विनाश होता है। अभी अनेक धर्म होने कारण कितना हंगामा है। तुम Journey of 100 परसेन्ट सालवेन्ट थे। फिर 84 जन्मों के बाद to 100 परसेन्ट इनसालवेन्ट बन पड़े हो। अब बाप आकर सबको जगाते हैं। अब जागो, सतयुग आ रहा है। सत्य बाप ही तुमको 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। भारत ही

Points:

जागो जागो, समय पहचानो...

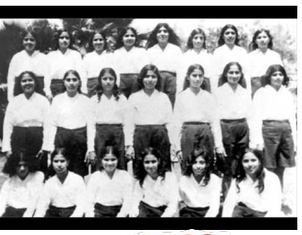

सचखण्ड बनता है। बाप सचखण्ड बनाते हैं, झूठ खण्ड फिर कौन बनाते हैं? 5 विकारों रूपी रावण। रावण का कितना बड़ा बुत बनाते हैं फिर उसको जलाते हैं क्योंकि यह है नम्बरवन दुश्मन। मनुष्यों को यह पता नहीं है कि कब से रावण का राज्य हुआ है। बाप समझाते हैं आधाकल्प है रामराज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। बाकी रावण कोई मनुष्य नहीं है, जिसको मारना है। इस समय सारी दुनिया पर रावण राज्य है, बाप आकर राम राज्य स्थापन करते हैं, फिर जय-जयकार हो जाती है। वहाँ सदैव खुशी रहती है। वह है ही सुखधाम। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप कहते हैं इस पुरुषार्थ से तुम यह बनने वाले हो। तुम्हारे चित्र भी बनाये थे, बहुत आये फिर सुनन्ती, कथन्ती भागन्ती हो गये। बाप आकर तुम बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं। बाप, टीचर प्यार करते हैं, गुरू भी प्यार करते हैं। सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। उन गुरूओं के पास तो एम आब्जेक्ट कोई होती नहीं। वह कोई पढ़ाई नहीं है, यह तो पढ़ाई है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

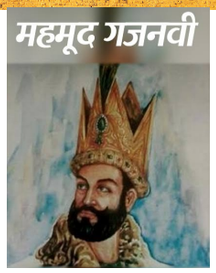

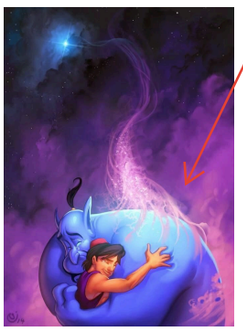

18-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इनको कहा जाता है युनिवर्सिटी कम हॉस्पिटल, जिससे तुम एवरहेल्दी, वेल्दी बनते हो। यहाँ तो है ही झूठ, गाते भी हैं झूठी काया... सतयुग है सचखण्ड। वहाँ तो हीरे जवाहरातों के महल होते हैं। सोमनाथ का मन्दिर भी भक्तिमार्ग में बनाया है। कितना धन था जो फिर मुसलमानों ने आकर लूटा। बड़ी-बड़ी मस्जिदें बनाई। बाप तुमको कारून का खजाना देते हैं। शुरू से ही तुमको सब साक्षात्कार कराते आये हैं। अल्लाह अवलदीन बाबा है ना। पहला-पहला धर्म स्थापन करते हैं। वह है डिटीज्म। जो धर्म नहीं है वह फिर से स्थापन होता है। सब जानते हैं प्राचीन सतयुग में इन्हों का ही राज्य था, उनके ऊपर कोई नहीं। डीटी राज्य को ही पैराडाइज कहा जाता है। अभी तुम जानते हो फिर औरों को बताना है। सबको कैसे पता पड़े जो फिर ऐसा कोई उल्हना न दे कि हमको पता नहीं पड़ा। तुम सबको बतलाते हो फिर भी बाप को छोड़कर चले जाते हैं। यह हिस्ट्री मस्ट रिपीट। बाबा के पास आते हैं तो बाबा पूछते हैं - आगे कभी मिले हो? कहते हैं हाँ बाबा 5 हज़ार वर्ष

value this time નહીં તો
જબ બાબા ચલે જાયેંગે તબ બહુત-બહુત રોયેંગે...

करने वाला होगा तो नहीं रोयेगी। मोह नहीं होगा तो समझेगी भावी। तुम्हारा भी बाप के साथ बहुत लव है। पिछाड़ी में बाबा चला जायेगा - तुम कहेंगे ओहो! बाबा चला गया, जिसने इतना सुख दिया! पिछाड़ी में बहुत रहते हैं। बाप से बहुत लव रहता है। तुम कहेंगे बाबा हमको राजाई देकर चला गया। प्रेम के ऑसू आयेंगे, दु:ख के नहीं। यहाँ भी बच्चे बहुत समय के बाद आकर बाप से मिलते हैं तो प्रेम के ऑसू आते हैं। यह प्रेम के ऑसू फिर माला का दाना बन जायेंगे। हमारा पुरुषार्थ ही है कि हम बाबा के गले का हार बनें, इसलिए बाबा को याद करते रहते हैं। SM 30/12/2022

m.m.m....imp.

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पहले हम मिलने आये थे। बेहद का वर्सा लेने आये थे, कोई आकर सुनते हैं, कोई को साक्षात्कार होता है ब्रह्मा का तो वह याद आता है। फिर कहते हैं हमने तो यही रूप देखा था। बाप भी बच्चों को देख खुश होते हैं। तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरती है ना। यह पढ़ाई है। 7 दिन का कोर्स लेकर फिर भल कहाँ भी रह मुरली के आधार पर चल सकते हैं, 7 दिन में इतना समझायेंगे जो फिर मुरली को समझ सकेंगे। बाप तो बच्चों को सब राज़ अच्छी रीति समझाते रहते हैं। अच्छा!

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

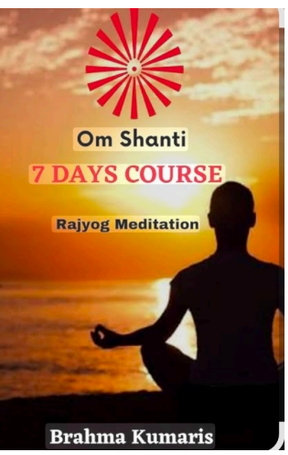

Don't Take it easy

इस ज्ञान को पाने के लिए भक्ति में अपना गला काटने को तैयार रहते थे

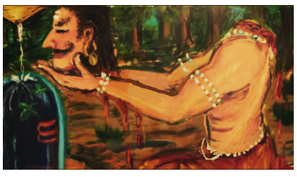

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वदर्शन चक्र फिराते पापों को भस्म करना है, रूहानी पढ़ाई से अपना पद श्रेष्ठ बनाना है। किसी भी परिस्थिति में आंसू नहीं बहाने हैं।

2) यह वानप्रस्थ अवस्था में रहने का समय है, इसलिए वनवाह में बहुत साधारण रहना है। न बहुत ऊंच, न बहुत नीच। वापस जाने के लिए आत्मा को सम्पूर्ण पावन बनाना है।

Most imp

I (the sparkling soul) am same throughout all 84 costumes (male & female both). I am immortal, eternal, imperishable. The costumes are perishable.

Geeta Adhyay: 2 shloka

न जायते म्रियते वा कदाचि नायं भूत्वा भविता वा न भूयः | अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ||20||

The soul is neither born, nor does it ever die; nor having once existed, does it ever cease to be. The soul is without birth, eternal, immortal, and ageless. It is not destroyed when the body is destroyed.

Points: ज्ञान योग

It's very long journey we have. Now, its time to return in our sweet silence home to rest in the lap of our sweet father shiva.

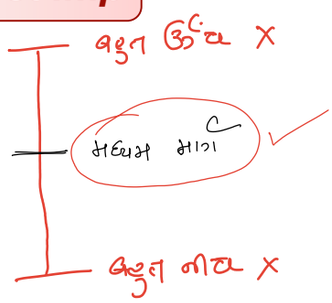

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

18-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-सदा मोल्ड होने की विशेषता से सम्पर्क और सेवा में सफल होने वाले सफलतामूर्त भव

Finale Achievement

जिन बच्चों में स्वयं को मोल्ड करने की विशेषता है वह सहज ही गोल्डन एज की स्टेज तक पहुंच सकते हैं।

जैसा समय, जैसे सरकमस्टांश हो उसी प्रमाण अपनी धारणाओं को प्रत्यक्ष करने के लिए मोल्ड होना पड़ता है।

मोल्ड होने वाले ही रीयल गोल्ड हैं। ये पक्का कर लो..

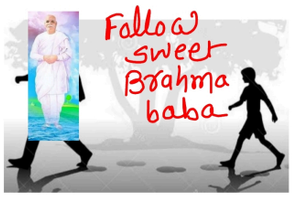

जैसे साकार बाप की विशेषता देखी - जैसा समय, जैसा व्यक्ति वैसा रूप - ऐसे फालो फादर करो तो सेवा और सम्पर्क सबमें सहज ही सफलतामूर्त बन जायेंगे।

स्लोगन:- जहाँ सर्वशक्तियां हैं वहाँ निर्विघ्न सफलता साथ है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.Imp.

अव्यक्त इशारे -

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

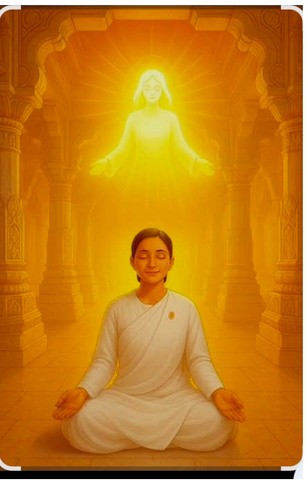

जैसे साकार में आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है,

वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो।

अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका अनुभव सहज होता जाए।

सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।

रूप बसन्त

विशाल नगरी में महाराज चन्द्रसेन की दो रानियाँ थीं। एक सुनीति जो बहुत ही भक्ति-भाव वाली थी, दूसरी कनकलता जो कि बहुत ही अभिमानी और अपनी ही मनमानी करने और कराने वाली थी। रानी सुनीति के दो बेटे थे - रूप कुंवर और बसंत कुंवर। दोनों ही बेटे बहुत ही एकाग्रता से राजविद्या पढ़ते थे। दूसरी रानी कनकलता का बेटा मान कुंवर बहुत ही उदण्ड और शरारती था। वह पढ़ाई पढ़ने की बजाए अपने मित्रों के साथ नगर में सबको परेशान कर अपना रोब जमाने निकल पड़ता था। छोटी-सी बीमारी में सुनीति रानी की मृत्यु के बाद रानी कनकलता ने दांवपेंच लगाकर दोनों कुंवरों को देश निकाला दिलवा दिया। राज्य से बाहर निकलने के बाद बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को समझाया कि हमें किसी से भी यह नहीं कहना है कि हम महाराजा चन्द्रसेन के बच्चे राजकुमार हैं क्योंकि ऐसा करने से अपने बाप का नाम बदनाम होगा।

ये दोनों भाई जहाँ भी काम करने जाते तो कोमल हाथों में छाले पड़ जाते थे पर फिर भी सबकुछ चुपचाप सह लेते थे। वे जहाँ-जहाँ काम करते वहाँ-वहाँ दोनों के गुण, बोलचाल, रॉयल्टी, व्यवहार आदि को देख सब यही कहते कि ये कोई साधारण लड़के नहीं लगते हैं, ये तो जैसे राजकुमार लगते हैं। कार्य कराने वाले कभी-कभी उनको अपमानित भी करते थे, ज्यादा काम भी कराते थे परन्तु फिर भी दोनों ही कुंवर सदा अपकार करने वालों पर भी उपकार करते थे। वे कभी किसी का काम बिगाड़ते नहीं थे।

थोड़ा धन भी वे जरूरतमंदों को दान अवश्य करते थे। कभी भोजन करने बैठे और कोई मांगने वाला आ जाता तो जिसके घर पर काम करते थे वह उनको भगाने की कोशिश करता था लेकिन रूप-बसंत खड़े होकर अपना

भोजन उनको दे देते थे। आसपास रहने वालों की समस्याओं को सुनकर उन्हें कुछ न कुछ सुझाव देते थे और अपनी तरफ से भी कुछ मदद अवश्य करते थे। पूजा-पाठ आदि भी करते थे। जिस भी गाँव में जाते थे वहाँ के लोग उन्हों के पास अपनी समस्याओं को लेकर स्वत: ही आते थे।

एक बार उन्हें लगा कि हम छोटे-छोटे गाँवों में काम करते हैं, इससे अच्छा है कि हम किसी बड़े नगर में जाकर काम करें। यह सोचकर दोनों भाई नगर की ओर चल दिये। चलते-चलते घोर जंगल आया और रात हो गई। उन्होंने सोचा कि रातभर यहीं ठहर जाते हैं। रात के चार प्रहरों में से दो प्रहर एक भाई पहरा देगा और अगले दो प्रहर दूसरा भाई पहरा देगा, ऐसा निश्चय किया गया। सबसे पहले बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को सुला दिया। दो प्रहर पूरे होने पर भी बड़े भाई की, छोटे को जगाने की इच्छा नहीं हुई लेकिन तीन प्रहर पूरे होते-होते अचानक बसन्त कुंवर की आंखें खुल गयीं। आसमान में तारे देखकर उसने कहा, भैया, आपने मुझे तीन प्रहर सोने दिया। अब आप आराम से सो जाइये। दिनभर चलने और तीन प्रहर जागरण की थकान के कारण रूप कुंवर गहरी नींद में सो गया। बसंत कुंवर जाग रहा था। उस समय पेड़ पर तोता-मैना आपस में बात कर रहे थे कि इस पेड़ पर एक साल में सिर्फ एक ही फल पकता है लेकिन यह फल ऐसा है कि जो इस फल को तोड़ेगा उसे विषैला नाग डसेगा और जो उसे खायेगा वह सुबह होते ही महाराजा बन जायेगा। लेकिन महाराजा बनते ही वह अपनी पुरानी याददाश्त भूल जायेगा। सिर्फ संस्कार इमर्ज रहेंगे। जब उसे कोई फिर से याद दिलायेगा तब ही उसे पुरानी स्मृति आयेगी। इसलिए आज तक कई लोगों ने यह फल खाने की कोशिश की लेकिन उन्हें विषैला नाग डस गया। तोता-मैना की ये बातें सुनकर बसंत कुंवर के मन में आया कि हम तो दोनों भाई हैं। रूप कुंवर ने तो ये बातें सुनी नहीं हैं तो मैं ऐसा करूं कि इस फल को तोड़कर बड़े भाई को खिला देता हूँ ताकि वह महाराजा बन जाये क्योंकि उनमें मेरे से भी ज्यादा

प्रजापालन के गुण हैं। वह प्रजा को बहुत सुखी रखेंगे (त्याग भावना)।

वह खुद फल खाकर महाराजा बन सकता था फिर भी उसने फल तोड़कर तुरन्त ही रूपकुंवर को जगाकर कहा, ''भैया, इस पेड़ पर बहुत ही मीठे फल थे। मैंने तो बहुत खाये, अब एक ही बचा है, आप इसे खा लो।'' ऐसा कहकर रूप कुंवर को फल खिला दिया। थोड़ी ही देर में एक विषैला नाग आया और बसंत कुंवर को डसकर एक पल में वहाँ से चला गया। बसंत कुंवर बेहोश हो गया। तब रूप कुंवर उसको उठाकर पास ही बहती हुई एक नदी के किनारे पर ले गया और दंश वाले भाग पर थोड़ा चीरा लगाकर पांव को बहते पानी में रखा ताकि खून के साथ जहर भी पानी में बह जाये। थोड़ा-सा उजियारा होने पर उसे थोड़ी ही दूरी पर नगर दिखाई दिया। वह किसी वैद्य को बुलाने के लिए उस ओर दौड़ पड़ा।

उस नगर के राजा को कोई वारिस नहीं था। राजा की मृत्यु के बाद राजपुरोहित ने कहा कि पूरे राज्य के लोग नगर चौक में इकट्ठे हो जायें और हथिनी जिस पर भी जल-कलष रखेगी वही इस राज्य का नया राजा बनेगा। उस अनुसार पूरे ही राज्य के लोग नगर-चौक में सुबह होने से पूर्व ही पहुँच गये।

दूसरी तरफ, रूप कुंवर वैद्य को ढूंढने जब राज्य में गया तो हर घर खाली था। वह जब नगर-चौक में पहुँचकर वैद्य से मिलकर उसको अपने साथ चलने की प्रार्थना कर ही रहा था कि उतने में ही हथिनी घूमती-घूमती उसी स्थान पर आकर ठहर गई और उसने रूप कुंवर के सिर पर ही जल-कलष रख दिया। कलष का जल सिर पर पड़ते ही रूप कुंवर पिछली याददाश्त भूल गया। सिर्फ राजाई संस्कार इमर्ज रहे। साधारण रूप वाला रूप कुंवर जो कि मूल रूप में राजाई कुल का ही बेटा था, अब सचमुच राजा बन गया। राज्याभिषेक के बाद जब उसने राज कारोबार संभाला तो पूरे ही राज्य में सुख-शान्ति का साम्राज्य

फैल गया। वह प्रजा को सब प्रकार की सुविधायें देने का ध्यान रखता। रात को और दिन में भी नगरचर्या करके लोगों के दु:ख-दर्द को जान लेता और फिर राज दरबार में चर्चा करके समाधान करता। उसका प्रजा के प्रति इतना वात्सल्य था कि थोड़े ही समय में वह प्रजाप्रिय राजा बन गया। उधर बसंत कुंवर नदी के बहाव में बहता हुआ उसी नगर के घाट के पास पहुँचा। तब कपड़े धोते हुए धोबी ने उसे बचा लिया और प्रयास करके उसे होश में ले आया। ठीक होने पर बसंत कुंवर ने अपने भाई रूप कुंवर को ढूंढने की कोशिश की। उसे पता चला कि वह इसी राज्य का महाराजा है लेकिन उसे यह भी पता था (पक्षी के कहने अनुसार) कि रूप कुंवर सारी ही याददाश्त भूल गया होगा और मैं जब याद दिलाऊंगा तभी उसे याद आयेगा। इसलिए वह युक्ति रचकर राज्य दरबार में पहुँच गया और वहाँ जाकर एक गीत सुनाया जिसमें अपनी पूरी जीवन कहानी सुना दी। गीत सुनते-सुनते महाराज रूप कुंवर को अपनी पुरानी स्मृति वापस इमर्ज हो गयी। और वह अपने भाई बसंत कुंवर को पहचान गया। बाद में उसे अपना मंत्री बना दिया और दोनों ही भाइयों ने बड़े ही सुचारू रूप से राज्य कारोबार चलाया।

आध्यात्मिक भाव – बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि ''बच्चे, आप अभी वनवाह में हो इसलिए रहो साधारण रूप में लेकिन आपके बोलचाल, व्यवहार आदि से सभी को यह लगे कि ये कोई साधारण आत्मा नहीं हैं। ये तो ईश्वरीय कुल या दैवी कुल की आत्मायें हैं। जैसे बसंत कुंवर ने सारी बातों का पता होते भी रूप कुंवर को महाराजा बनाया उसी तरह तुम बच्चों में भी त्याग की भावना होनी चाहिए। जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे तब तुम पुरानी याददाश्त, जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है, वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारों में इमर्ज रहेंगे। कल्प के अन्त में मैं आकर तुम बच्चों को फिर से आदि-मध्य और अन्त का ज्ञान दूँगा तब फिर से तुम्हें पुरानी स्मृति इमर्ज हो जायेगी।''

बापदादा बच्चों का सदा आगे बढ़ने का उमंग उत्साह देखते हैं। बच्चों का उमंग बापदादा के पास पहुँचता है। बच्चों के अन्दर है कि विश्व के वी.वी.आई.पी. बाप के सामने ले जाऊँ - यह उमंग भी साकार में आता जायेगा। क्योंकि नि:स्वार्थ सेवा का फल ज़रूर मिलता है। सेवा ही स्व की स्टेज बना देती है। इसलिए यह कभी नहीं सोचना कि सर्विस इतनी बड़ी है मेरी स्टेज तो ऐसी है नहीं। लेकिन सर्विस आपकी स्टेज बना देगी। दूसरों की सर्विस ही स्व उन्नति का साधन है। सर्विस आपेही शक्तिशाली अवस्था बनाती रहेगी। बाप की मदद मिलती है ना। बाप की मदद मिलते-मिलते वह शक्ति बढ़ते-बढ़ते वह स्टेज भी हो जायेगी। समझा! इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि इतनी सर्विस मैं कैसे करूँगा-करूँगी, मेरी स्टेज ऐसी है। नहीं। करते चलो। बापदादा का वरदान है - आगे बढ़ना ही है। सेवा का मीठा बंधन भी आगे बढ़ने का साधन है। जो दिल से और अनुभव की अथार्टी से बोलते हैं उनका आवाज दिल तक पहुँचता है। अनुभव की अथार्टी के बोल औरों को अनुभव करने की प्रेरणा देते हैं। सेवा में आगे बढ़ते-बढते जो पेपर आते हैं वह भी आगे बढ़ाने का ही साधन हैं। क्योंकि बुद्धि चलती है, याद में रहने का विशेष अटेन्शन रहता है। तो यह भी विशेष लिफ़्ट बन जाती है। बुद्धि में सदा रहता कि हम वातावरण को कैसे शक्तिशाली बनायें। कैसा भी बड़ा रूप लेकर

विघ्न आए लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं का उसमें फायदा ही है। वह बड़ा रूप भी याद की शक्ति से छोटा हो जाता है। वह जैसे कागज का शेर।

(27.02.1985)

9.5 दिनचर्या पर ध्यान और पूर्व तैयारी :

अमृतवेले की स्मृति का स्वरूप, गॉडली स्टडी करने की स्मृति का स्मृति-स्वरूप, कर्म करते हुए कर्मयोगी रहने के स्मृति-स्वरूप, ट्रस्टी बन अपने शरीर निर्वाह के व्यवहार के समय का स्मृति-स्वरूप, अनेक विकारी आत्माओं के सम्पर्क में आने का स्मृति स्वरूप, वायब्रेशन्स वाली आत्माओं का वायब्रेशन परिवर्तन करने का कार्य करते समय का स्मृति-स्वरूप — सब डायरेक्शन मिले हुए हैं। याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और शृंगार अपना-अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध-रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेन्ज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य वैसा स्मृति-स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामीग्रामी मन्दिर हैं, वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्मायें इस संगमयुग पर जैसा समय, वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।

बापदादा बच्चों के सारे दिन की दिनचर्या को चेक करते हैं। रिजल्ट में समय प्रमाण 'स्मृति-स्वरूप' का अभ्यास कम दिखायी देता है। स्मृति में है, लेकिन स्वरूप में नहीं आता है।

समझा?

समय होगा अमृतवेले का, जिस समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय भी जो मास्टर बीज-रूप, वरदानी-स्वरूप की स्मृति होनी चाहिए उसके बजाय, समर्थी स्वरूप के बजाय, बाप समान स्थिति का अनुभव करने के बजाय कौन-सा स्वरूप धारण करते हैं? मैजारिटी उलहने देते या शिकायत करते हैं या दिलशिकस्त स्वरूप होकर बैठते। वरदानी, विश्व-कल्याणी स्वरूप के बजाय स्वयं के प्रति वरदान माँगने वाले बन जाते हैं या अपनी व दूसरों की

What we have to be...

18/12/25

शिकायतें करेंगे। तो जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप न होने से समर्थी स्वरूप भी नहीं बन पाते। इसी प्रकार से सारे दिन की दिनचर्या में, जैसा सुनाया कि समय प्रमाण स्वरूप धारण न करने के कारण, सफलता नहीं हो पाती, प्राप्ति नहीं हो पाती। फिर कहते हैं खुशी क्यों नहीं होती? इसका कारण क्या हुआ? मन्त्र और यन्त्र को भूल जाते हैं। पहले चैक करो कि जैसा समय वैसा स्वरूप रहा? अगर नहीं, तो फौरन अपने को चेक करने के बाद चेन्ज करो। कर्म करने से पहले स्मृति-स्वरूप को चेक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। **कहीं भी कोई कार्य-अर्थ जाना होता है, तो जाने के पहले तैयारी करनी होती है, न कि बाद में। ऐसे हर काम के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो।** करने के बाद सोचने से कर्म की प्राप्ति के बजाय पश्चाताप हो जाता है। तो द्वापर से प्राप्ति की बजाय प्रार्थना और पश्चाताप किया, लेकिन अब प्राप्ति का समय है, तो प्राप्ति का आधार हुआ — जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप।

समझा?

m.m.m....imp.

Mind very well...